आरएनआई नं. : RAJHIN/2014/59353
डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023

प्रेषण :- कार्यालय चेतक सर्कल पोस्ट ऑफिस ,उदयपुर
प्रेषण दिनांक:-प्रतिदिन

दैनिक समाचार–पत्र

मन के जीते जीत सदा

• वर्ष - 8 • अंक-2270 • उदयपुर, शुक्रवार 12 मार्च, 2021 • प्रेषण दिनांक : प्रतिदिन • कुल पृष्ठ : 4 • मूल्य : 1 रुपया

समाचार–जगत्
सकारात्मक व जनहितार्थ खबरें

सेवा–जगत्
सेवा पथ पर आपका नारायण सेवा संस्थान

मलेरिया पर विजय के लिये

बेंगलुरु स्थित टाटा इंस्टीट्यूट फॉर जेनेटिक्स एंड सोसायटी (टीआइजीएस) और इंस्टीट्यूट ऑफ बायोइन्फॉर्मेटिक्स एंड एप्लायड बायोटेक्नोलॉजी के शोधकर्ताओं ने बताया कि वेक्टर जनित (मच्छर, मक्खी आदि से मनुष्य में फैलने वाली) बीमारियों में मलेरिया दुनिया में सबसे घातक बीमारियों में से है। इससे 2019 में करीब चार लाख लोगों की जान गई थी। मलेरिया का प्रसार रोकने में सीआरआइ एसपीआर और जीन आधारित रणनीति अहम है। इस रणनीति पर आगे बढ़ने के लिए मच्छर के जीनोम की विस्तृत जानकारी की जरूरत होती है। सीआरआइएसपीआर तकनीक में जीन संशोधन किया जाता है और मच्छर के जीन की क्रियाप्रणाली को बदल दिया जाता है, जिससे बीमारी का प्रसार रुकता है।

विज्ञान पत्रिका बीएमसी बायोलॉजी में प्रकाशित शोध के सह लेखक बियर ने कहा, नई जीनोम मैपिंग से एनाफिलीज स्टीफेंसी के जेनेटिक्स अध्ययन में नए युग की शुरुआत होगी। नई मैपिंग में सामने आए जीन मच्छरों के खून चूसने, खून को पचाने, प्रजनन एवं बीमारी फैलाने वाले जीवाणु के प्रति प्रतिरोधक क्षमता विकसित करने में अहम भूमिका निभाते हैं। इनमें बदलाव से बीमारी के प्रसार को रोकने में बड़ी कामयाबी मिल सकती है। उल्लेखनीय है कि भारत ने 2030 तक मलेरिया मुक्त होने का लक्ष्य रखा है।

2022 में होगा चंद्रयान-3 का प्रक्षेपण

इसरो प्रमुख के सिवन ने कहा है कि चंद्रयान–3 का प्रक्षेपण अब 2022 में होने की संभावना है जो पहले 2020 के अंत में प्रक्षेपित किया जाना था। चंद्रयान–3 में अपने पूर्ववर्ती यानों की तरह ऑर्बिटर नहीं होगा।

सिवन ने कहा, हम इस पर काम कर रहे हैं। यह चंद्रयान–2 की तरह ही है। लेकिन इसमें ऑरबिटर नहीं होगा। चंद्रयान–2 के साथ भेजे गए आर्विटर को ही चंद्रयान–3 के लिए इस्तेमाल किया जाएगा। इसी के साथ हम एक प्रणाली पर काम कर रहे हैं और ज्यादा संभावना है कि प्रक्षेपण अगले साल होगा।

चंद्रयान–2 का प्रक्षेपण 22 जुलाई, 2019 को हुआ था और इसे चंद्रमा के दक्षिणी ध्रुव क्षेत्र में रोवर उतारने के लिए भेजा गया था। हालांकि, चंद्रयान–2 का लैंडर विक्रम सात सितंबर, 2019 को सॉफ्ट लैंडिंग करने में सफल नहीं रहा और पहले ही प्रयास में यह सफलता अर्जित करने का भारत का सपना अधूरा रह गया। इसरो के लिए चंद्रयान–3 भी एक महत्वपूर्ण मिशन है, जो अंतरग्रहीय लैंडिंग में भारत के लिए आगे का मार्ग प्रशस्त करेगा। सिवन ने कहा कि गगनयान परियोजना के तहत इस साल दिसंबर में इसरो के प्रथम मानवरहित मिशन को अंजाम देने की योजना है, जिसे पिछले साल दिसंबर में ही अंजाम दिया जाना था। उन्होंने कहा कि इसके बाद एक और मानवरहित मिशन को अंजाम दिया जाएगा तथा फिर तीसरी बार में मानवयुक्त मिशन को अंजाम दिया

जाएगा।

गगनयान परियोजना के तहत 2022 तक तीन भारतीयों को अंतरिक्ष में भेजने की योजना है। इस मिशन के लिए चार पायलट चुने गए हैं जो इस समय रूस में प्रशिक्षण ले रहे हैं। इस परियोजना के तहत मानव मिशन के प्रक्षेपण के बारे में पूछे जाने पर सिवन ने कहा, काफी प्रौद्योगिकी प्रदर्शन की आवश्यकता है। यह परखने के बाद कि सभी प्रौद्योगिकी एकदम सही है, हम मानव मिशन के प्रक्षेपण के बारे में निर्णय करेंगे।

सीधा हुआ सोनू का टेढ़ा पैर

धामपुर (बिजनौर) उत्तरप्रदेश निवासी अब्दुल वाहिद का पुत्र जन्म से ही पोलियोग्रस्त पैदा हुआ। जीवन के 17 वर्षों में उसे पिता ने कई हॉस्पीटल में दिखाया पर कहीं भी पोलियो रोग की दिव्यांगता में राहत नहीं मिली। परेशान परिवार सोनू की तकलीफ देखकर बहुत दुःखी होता था पर जन्मजात बीमारी के आगे वे लाचार थे। एक दिन टेलीविजन पर नारायण सेवा संस्थान की दिव्यांगता ऑपरेशन सेवा के बारे में देखा तो बिना समय गंवाये वो संस्थान में उदयपुर पहुंच गए। डॉ.ओ.पी. माथुर ने जांच करके दांये पांव का ऑपरेशन कर दिया जिससे उन्हें बड़ा फर्क नजर आया। दूसरे पांव के ऑपरेशन के लिए संस्थान में पुनः आए। सफल ऑपरेशन के पश्चात् सोनू पूर्ण–स्वस्थ है। उन्हें भरोसा है कि वह शीघ्र ही पोलियो की दिव्यांगता को मात देकर अपने पैरों पर चलर गांव पहुंचेगा।

उमेश की दो साल से रुकी जिन्दगी शुरु

चोरी–चोरा, गोरखपुर (यू.पी.) निवासी 27 वर्षीय उमेश कुमार राजभर करीब 2 साल पहले एक रेल दुर्घटना के शिकार हो गए। दुर्घटना का जिक्र करते हुए वे रूंधे गले से बताते हैं कि मां–पिता की मौत तो मेरे लड़कपन में हो गई थी। खैर ईश्वर की मर्जी के आगे किसी की नहीं चलती। भाभी और भाई ने मुझे बड़ा कर किया। परिवार की मदद के लिए लोहे के कारखाने में मजदूरी करने लगा। घरवालों से मिलने के लिए गांव जा रहा था कि चलती ट्रेन में चढ़ते वक्त गिर पड़ा। मुझे तो कुछ सुध नहीं रही बांया पांव पूरी तरह क्षतिग्रस्त हो गया था। किसी ने मुझे हॉस्पीटल पहुंचाया। वहां करीब 1 माह तक इलाज चला जिसके दौरान घुटने के नीचे से पांव काटना पड़ा। कल तक दौड़ रही जिन्दगी एकाएक थम गई। बेड पर बैठे रहने के सिवा कुछ भी नहीं कर सकता। कुछ दिन पहले किसी परिचित ने नारायण सेवा संस्थान की जानकारी दी तो मैं 4 जनवरी को उदयपुर पहुंचा। संस्थान की प्रोस्थेटिक टीम ने कटे पांव का मेजरमेंट लिया और कृत्रिम पांव लगा दिया। अब मैं अपने पांवों पर चलने लगा हूं। मै इतना खुश हूं कि कह नहीं पा रहा .... बस इतना ही कहूंगा कि मेरी जिन्दगी रूक गई थी जिसे फिर से शुरू करने वाली नारायण सेवा संस्थान और इनके डॉक्टर्स व टीम को बहुत धन्यवाद ... आपने कृत्रिम अंग का मुझे उपहार दिया है ... मैं इसके लिए बहुत आभारी रहूंगा....

बस कंडक्टर की बेटी ऑलेम्पिक में बढ़ाएगी देश का मान

अंतरराष्ट्रीय रेस वॉकर प्रियंका गोस्वामी ने नए रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक जीता। मेरठ निवासी अंतरराष्ट्रीय एथलीट प्रियंका गोस्वामी ने रांची में चल रहे राष्ट्रीय एथलेटिक्स चौंपियनशिप में ओलंपिक का कोटा हासिल किया है। ओलंपिक क्वालीफाई करने के लिए पिछले पांच साल से प्रयास कर रही। मेरठ निवासी अंतरराष्ट्रीय एथलीट प्रियंका गोस्वामी ने रांची में चल रहे राष्ट्रीय एथलेटिक्स चैंपियनशिप में ओलंपिक का कोटा हासिल किया है।

स्टार रेस वॉकर ने नए रिकॉर्ड के साथ स्वर्ण पदक पर कब्जा जमाया। प्रियंका ने कहा, निश्चित रूप से यह उपलब्धि सबसे अलग और सबसे खास है। इसके लिए मैं पिछले छह महीने से कड़ी मेहनत कर रही हूं। सच कहूं तो एक खिलाड़ी के लिहाज से ओलंपिक का कोटा हासिल करना सबसे बड़ा बड़ा सपना पूरा होने जैसा है। प्रियंका गोस्वामी पिछली बार ओलंपिक क्वालीफिकेशन के लिए आयोजित रेस वॉक में 36 सेकंड से चूक गई थीं।

24 वर्षीय एथलीट कहती हैं, इसके बाद से ही मैंने तैयारी शुरू कर दी थी। माता–पिता का आशीर्वाद और ईश्वर की कृपा से मैं टोक्यो ओलंपिक में में देश का प्रतिनिधित्व करूंगी। बता दें कि क्वालीफिकेशन के लिए एक घंटा 21 मिनट का समय निर्धारित किया गया था। प्रियंका ने इस उपलब्धि का श्रेय साई सेंटर के अपने कोच गुरमीत सिंह को दिया है। प्रियंका के पिता मदन गोस्वामी रोडवेज के कंडक्टर हैं

धन्यवाद नारायण सेवा

मेरा नाम देवीलाल खटीक हैं, वल्लभनगर कर रहने वाला हूँ। मेरी बच्ची का नाम आयुषी खटीक है। इसके बचपन से उसके पैर का पंजा नहीं था। पैर बना ही नहीं था। पैर में भी कहीं गठान थी। तो फिर नारायण सेवा संस्थान का पता लगा।, किसी ने कहा कि नारायण सेवा में इसका ऑपरेशन हो जायेगा हम यहां चेकअप कराने ले के आये थे। फिर डॉक्टर ने कहा कि, इसका ऑपरेशन करना पड़ेगा। फिर बाद में चलने लग जायेगी। फिर यहां पे ऑपरेशन किया, फिर बाद में पैर बनाया था।

आज ये व्यवस्थित चल रही है। पढ़ाई भी करने जा रही है। दो– तीन किलोमीटर चल भी रही है। सरलता से चल देती है। नारायण सेवा का मैं बहुत– बहुत आभारी हूँ कि इस बच्ची को इस लायक बनाया है कि, पैर दिया है। मैं धन्यवाद करता हूँ नारायण सेवा संस्था का।

अनमोल तोहफा

लोग जब उपहार भेंट कर वैलेटांइन डे मना रहे थे, अहमदाबाद के अस्पताल में विनोद पटेल ने अपनी हमसफर को किडनी दान कर जिंदगी का अनमोल तोहफा दिया। अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक डॉ. सिद्धार्थ मावानी की देख–रेख में सफल प्रत्यारोपण हुआ।

विनोद पटेल ने बताया कि जिंदगी के 23 साल सुख–दुख के पल मिलकर जिए तो इस संकट को मिलकर जीना जरूरी था। पत्नी रीटा ने किसी संकट में उन्हें अकेला नहीं छोड़ा, वह अपनी पत्नी को विपत्ति में अकेला कैसे छोड़ सकते थे। पत्नी की दोनों किडनी खराब होने के बाद अब एक किडनी से उनकी पत्नी और एक के सहारे वह खुद जीवित रहेंगे। पत्नी रीटा चार साल से किडनी रोग से जूझ रही थी। इस दंपती ने 13 फरवरी को वैवाहिक जीवन के 23 साल पूरे किए हैं।

साढ़े पांच घंटे चला ऑपरेशन– किडनी ट्रांसप्लांट करने वाले शैल्बी अस्पताल के वरिष्ठ चिकित्सक ने बताया कि ऑपरेशन सफल रहा। पति–पत्नी की हालत बेहतर है। ऑपरेशन पांच से साढ़े पांच घंटे चला। उन्होंने बताया कि बहुत कम मामले ही देखने को मिलती है जब पुरुष महिला को किडनी दान दे, सभी को बराबर आगे आना चाहिए।

किडनी देने में महिलाएं दस गुना आगे– अहमदाबाद के सिविल अस्पताल केंपस में इंस्टीट्यूट ऑफ किडनी डिजीज एंड रिसर्च सेंटर (आइकेडीआरसी) के अनुसार किडनी देने के मामले मे महिलाओं का योगदान 80 फीसदी से अधिक है। 1998 से 2021 तक पतियों को नया जीवन देने के लिए 1,050 महिलाओं ने किडनी दी।

अंतहीन संभावनायें – दिव्यांगता मिटाने के लिये विभिन्नआयाम

WORLD OF HUMANITY का निर्माण प्रगति पर.....

अंतहीन संभावनाएं - दिव्यांगता मिटाने के विभिन्न आयाम

चिकित्सा
- निदान (एक्स रे, ओपीडी, लैब)
- उपचार (कृत्रिम अंग और कैलीपर्स)
- पोस्ट ऑपरेटिव केयर (वार्ड, आईसीयू)
- चिकित्सा सहायता (फार्मेसी एवं फिजियोथेरेपी)

स्वावलम्बन
- हस्तकला या शिल्पकला
- सिलाई प्रशिक्षण
- डिजिटल (कंप्यूटर) प्रशिक्षण
- मोबाइल फोन मरम्मत प्रशिक्षण
- नारायण चिल्ड्रन एकेडमी (निःशुल्क डिजीटल स्कूल)

सशक्तिकरण
- दिव्यांग शादी समारोह
- दिव्यांग हीरोज
- दिव्यांग खेल अकादमी
- दिव्यांग संगोष्ठी - सेमीनार
- इंटर्नशिप वॉलंटियर

सामुदायिक सेवाएं
- आदिवासी और ग्रामीण शिक्षा
- वस्त्र वितरण
- दृश्य एवं श्रवण बाधित के लिए आवासीय विद्यालय
- भोजन सेवा
- राशन वितरण
- वस्त्र और कंबल वितरण
- दवा वितरण

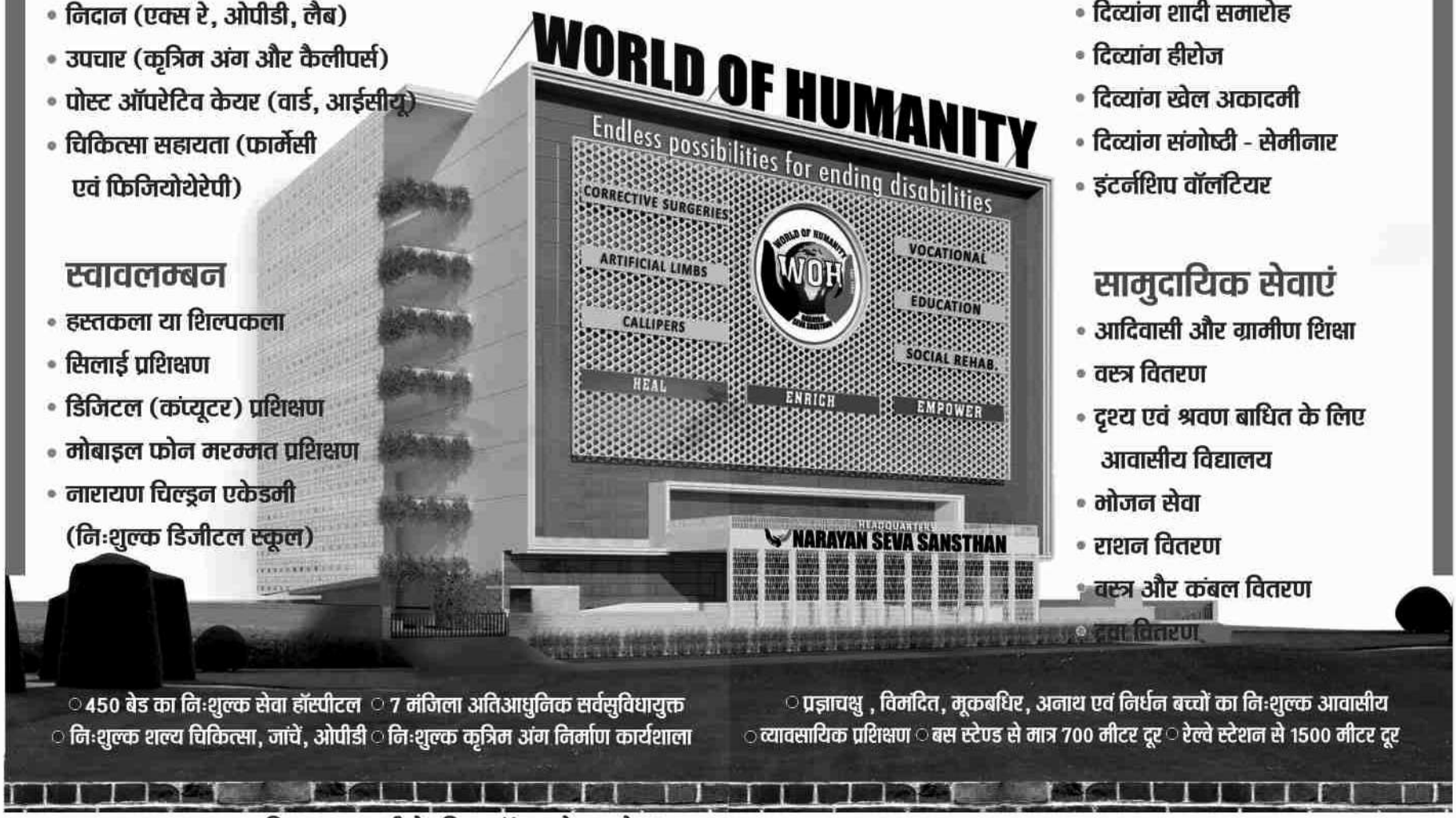

○ 450 बेड का निःशुल्क सेवा हॉस्पीटल ○ 7 मंजिला अतिआधुनिक सर्वसुविधायुक्त ○ निःशुल्क शल्य चिकित्सा, जांचें, ओपीडी ○ निःशुल्क कृत्रिम अंग निर्माण कार्यशाला

○ प्रज्ञाचक्षु , विमंदित, मूकबधिर, अनाथ एवं निर्धन बच्चों का निःशुल्क आवासीय ○ व्यावसायिक प्रशिक्षण ○ बस स्टेण्ड से मात्र 700 मीटर दूर ○ रेल्वे स्टेशन से 1500 मीटर दूर

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999

सम्पादकीय

'काज परे कछु और है, काज सरे कछु और'

नीति के प्रख्यात कवि रहीम ने अपने अनुभवों के आधार पर यह बात कही है। सच भी रहा होगा। आज के समय में तो यह ध्रुव सत्य हो गया है। जो दीपक रात भर जलकर हमारे लिये अंधकार से लोहा लेता है उसे हम ही सुबह होने पर बुझा देते हैं। यों इस बात को दो रूपों से देखना सटीक होगा। दीपक को हम बुझाते इसलिये हैं कि उससे ज्यादा प्रकाश सूरज से मिल रहा है। पर दीपक का महत्व इससे कम नहीं होता, यदि उसका आभार जताते हुए उसे बुझाया जाये तो फिर स्वार्थ की भावना नहीं रहेगी। सत्य तो यह है कि हरेक व्यक्ति, हरेक सामग्री, हरेक विचार का अपना महत्व होता है। उसका महत्व अपनी उपयोगिता को रेखांकित नहीं करता है वरन् उसका अपना अस्तित्व होता है। यह अस्तित्व साधारण दृष्टि से देखें तो स्वार्थ का संदेश देता है पर ठीक से देखें तो उसका अस्तित्व कभी मिटता नहीं है। हरेक की भूमिका अलग होती है, वह उसी भूमिका में उपादेय होता है।

कुछ काव्यमय

अस्तित्व और उपादेयता
परिपूरक हैं परस्पर।
इनका संतुलन कार्य को
साध लेता है तत्पर।
हरेक का अपना वजूद है,
वह समय पर उजागार होता है।
वही जीवन में
नई चेतना संजोता है।

- वख्तीचन्द राव, अतिथि सम्पादक

फोन पर जिससे बात हुई उसके उत्साहजनक स्वर से कैलाश की आशा बढ़ गई। वह तो सोच रहा था कि बात करते ही उधर से इन्कार आ जायेगा लेकिन इस बारे में विस्तृत बातचीत के लिये वो दिल्ली बुला रहे थे । बात जमे, नहीं जमे इस कारण कैलाश स्वयं तो नहीं गया, उसने अपने एक साधक को दिल्ली भेज दिया। वह अपने कार्यकर्त्ताओं को साधक ही कहता है। साधक ने चैनल के कार्यालय में जाकर बातचीत की और नारायण सेवा को प्रतिदिन आधा घंटे का समय दिये जाने की मांग की। चैनल वाले तैयार थे मगर इसके लिये 75 हजार प्रति माह का शुल्क था। साधक को उन्होंने बताया कि प्रतिदिन रात्रि को आठ बजे से साढ़े आठ बजे के प्राईम टाईम में प्रसारण किया जायगा जो अगले दिन सुबह 4 बजे से साढ़े चार बजे के मध्य निशुल्क रूप से पुनः प्रसारित किया जायगा।

साधक सारी बातचीत करके उदयपुर लौट आया। केलाश के सामने यक्ष प्रश्न यही था कि इस दिशा में आगे बढ़े या न बढ़े। उसे इतना तो विश्वास था कि चैनल को दिये जाने वाले 75 हजार रुपये प्रति महिना तो आसानी से निकल आयेंगे मगर आधे घंटे के कार्यक्रम में बोलेंगे क्या। आधे घन्टे प्रतिदिन बोलने का कार्यक्रम तैयार करने में भी तो रोज कई घन्टे लग जायेंगे। इतना समय कहां था। कैलाश की व्यस्तताएं बढ़ गई थी । वह सेवाधाम में रहने लगा था, यहां मिलने आने वालों का तांता लगा रहता था, इस सबके बीच इतना समय निकाल पाना मुश्किल कार्य था।

एक तरफ यह सोच थी तो दूसरी तरफ टी.वी. पर आने का आकर्षण भी था। कैलाश के मन की मुराद भी यही थी। जो होगा देखा जायगा सोच कर उसने चैनल को हां कर दी तथा आवश्यक औपचारिकताएं पूरी कर लीं। एक बार कार्यक्रम करने का तय हो गया तो कार्यक्रम तैयार करने के लिये टीम जुटाना तथा हर कार्यक्रम की एक पटकथा बनाने का भारी कार्य सिर पर आ गया।

एक सेवाभावी मानव की जीवनी

(वरिष्ठ पत्रकार श्री सुरेश जी गोयल द्वारा लिखित–झीनी–झीनी रोशनी से)

अंश-203

अपनों से अपनी बात

सेवा से पीड़ा मुक्ति

एक गृहस्थ गरीबी के कारण पारिवारिक क्लेश से परेशान ....एक दिन चुपचाप वह परिवार छोड़कर सुख–शान्ति की तलाश में जंगल की ओर निकल गया। सूर्यास्त होने पर रात्रि विश्राम के लिए एक सुनसान झोंपड़े की ओर बढ़ा....।

झोंपड़े में एक साधु को ध्यानस्थ बैठा देखकर, बाहर ही सो गया। प्रातः उठकर देखा.... साधु तब भी उसी प्रकार ध्यानस्थ थे। मन में आया... साधु के यहाँ रात्रि विश्राम पाया है..... बदले में कुछ सेवा कर लूँ.... तब आगे बढूँ। उसने झोंपड़ी के चारों ओर बिखरे सूखे फूल–पत्ते आदि साफ किये और चलने को हुआ।

तभी ...कुछ लोग वहाँ आये। पूछने पर उन्होंने बताया... ये साधु यहाँ कई वर्षों से इसी तरह ध्यानस्थ हैं। कभी–कभार 4–6 दिन में कुछ समय के लिए ध्यान का त्याग करते हैं। ये लोग प्रतिदिन कुछ खाद्य सामग्री यहाँ रख देते हैं। साधु महात्मा का जब मन होता है, ग्रहण कर लेते हैं यह कहते हुए उन लोगों ने इस गृहस्थ से भी भोजन करने

का आग्रह किया जिसे उसने स्वीकार कर लिया।

उसने सोचा... इन महात्मा का आशीर्वाद लेकर ही आगे बढ़ना चाहिये। वह वहीं रूक गया, क्योंकि महात्मा कब ध्यान को पूर्ण करेंगे..... पता नहीं। कई दिन बीत गये। वह प्रतिदिन आस–पास सफाई करता, पेड़–पौधों को पानी देता और ....गाँव वालों द्वारा लाया जाने वाला प्रसाद ग्रहण करता। इस प्रकार वह झोंपड़ी और परिवेश एक सुन्दर आश्रम का रूप लेने लगे।

एक दिन जब वह सो कर उठा तो देखा ....साधु महात्मा ध्यान से उठ चुके थे ... आश्रम के आस–पास घूम रहे थे। अनेक पशु–पक्षी उन महात्मा के साथ–साथ इधर–उधर चल रहे थे। यह सब देख वह गृहस्थ विस्मित था।

तभी महात्मा ने उसे पूछा कि वह कौन है? कहाँ से आया है.... यहाँ सफाई किसने की है....? उस गृहस्थ ने अपनी व्यथा सुना दी। साधु महात्मा ने करुणा पूर्वक सन्निकट पुष्प–गुच्छ से एक पंखुड़ी तोड़ कर उस गृहस्थ को दी और कहा.... मैं तुम्हारी सेवा से प्रसन्न हूँ... अपने घर जा.... असहाय पीड़ितों की सेवा कर.... इस पंखुड़ी के दर्शन कर..... यह तुम्हें सेवा–प्रेरणा देगी और तुम्हारे परिवार में सुख–शान्ति–समृद्धि आयेगी।

गृहस्थ घर लौटा। उन सिद्ध महात्मा के वचनानुरूप सेवा धर्म अपनाया। उसके घर में सुख–समृद्धि का वास हुआ। यह प्रसंग एक संकेत मात्र है। सेवा का प्रतिफल अकल्पनीय होता है। भौतिक–मानसिक–सामाजिक–पारिवारिक–वैयक्तिक संताप, पीड़ा से मुक्ति का एक मात्र प्रभावी उपाय 'सेवा' है। देरी न करें। असहाय–विकलांग की सेवा का व्रत लें। आपका शुभ होगा।

– कैलाश 'मानव'

पुष्प बनें, पाषाण नहीं

एक राजा को विवाह के बहुत वर्षों पश्चात् जब पुत्र रत्न की प्राप्ति हुई तो राजा अत्यंत प्रसन्न हुए। राजा ने उसका लालन–पालन अत्यंत प्यार से और कोमलता से किया। इस प्रकार के लालन–पालन से राजकुमार अत्यंत दुर्व्यवहारी हो गया। वह किसी से आदर से बात नहीं करता था। राजा इस बात से चिन्तित रहने लगे। एक दिन एक मंत्री ने राजा को एक जंगल में रहने वाले महात्मा के पास राजकुमार को ले जाने की सलाह दी। राजा अपने पुत्र को लेकर जंगल में उन महात्मा के पास गए। महात्मा के पास जाकर राजा ने उन्हें सारा वृतांत कह सुनाया। महात्मा ने कहा –राजन्! आप चिन्तित मत होइए। आप राजपुत्र को यहीं छोड़ जाइए। मैं इनका व्यवहार परिवर्तित कर दूँगा। राजा पुत्र को महात्मा जी के पास छोड़कर चले गए। राजकुमार के गुरूकुल में प्रथम दिवस पर महात्मा ने कहा–यदि भोजन करना है तो माँग कर लाना पड़ेगा। राजकुमार ने माँग कर लाने से मना कर दिया। महात्मा ने राजकुमार को उसके हाल पर छोड़ दिया। राजकुमार उस दिन भूखा रहा। दूसरे दिन पुनः महात्मा ने राजकुमार से कहा – क्या आज भी भूखे रहना चाहते हो। राजकुमार ने कहा–नहीं। आज मैं माँगकर लाऊँगा। राजकुमार अन्य शिष्यों के साथ माँगने के लिए पास के गांव में चला गया, किन्तु राजसी प्रवृति होने के कारण माँगने में विनम्रता नहीं थी। इस कारण उसे पर्याप्त भिक्षा नहीं मिली। राजकुमार ने महात्मा जी से कहा–दूसरे शिष्यों को तो भिक्षा पूरी मिली और उनका पेट भर गया, किंतु मुझे आधे से भी कम में संतुष्ट होना पड़ा।

महात्मा जी ने राजकुमार को समझाया कि इस बार विनम्रता से भिक्षा माँगना, अवश्य मिलेगी। राजकुमार ने गुरूजी की बात मानकर धीरे–धीरे अपने व्यवहार को विनम्र और भाषा को मृदु बनाया। इससे राजकुमार के व्यक्तित्व में काफी परिवर्तन आ गया।

एक दिन महात्मा जी व राजकुमार कहीं जा रहे थे। बीच राह में एक बगीचा आया। जिसमें अलग–अलग प्रकार के फल–फूल व पेड़–पौधे लगे हुए थे। गुरूजी ने राजकुमार को एक फूल तोड़कर लाने को कहा–राजकुमार फूल तोड़कर ले आया। महात्मा जी ने राजकुमार को फूल सूंघने को कहा। राजकुमार ने वैसा ही किया। महात्मा ने पूछा – फूल से क्या प्राप्त हुआ?

राजकुमार ने कहा – मीठी–मधुर महक आ रही है।

महात्मा ने कहा – क्या ये मधुर महक और लेते रहना चाहोगे?

राजकुमार ने स्वीकारोक्ति दी। फिर महात्मा ने उसे किसी पेड़ के पत्ते तोड़ कर लाने को कहा। राजकुमार ने वैसा ही किया। महात्मा ने पूछा –ये पत्ते किस पेड़ के हैं?

राजकुमार ने कहा –नीम के।

महात्मा जी – खाना चाहोगे?

राजकुमार – नहीं।

तब महात्मा जी ने समझाया कि यदि तुम अपने व्यक्तित्व को फूल के समान खुश्बूदार बनाओगे तो सभी तुम्हारे पास आना चाहेंगे और अगर नीम के समान कड़वे बनोगे तो कोई भी तुम्हारे पास नहीं आना चाहेगा। इस सीख का राजकुमार के मन पर गहरा असर हुआ और वह पूरी तरह बदल गया। महात्मा ने राजकुमार को राजा को सौंपते हुए कहा कि अब यह आपका राज्य संभाल लेगा। राजा अत्यंत प्रसन्न हो गए।

–सेवक प्रशान्त भैया

इन फल सब्जियों के बीजों से होते हैं ये चौंकाने वाले फायदे

कभी–भी फल और सब्जियों के बीज को बेकार समझकर न फेंकें। ध्यान रहे हर तरह के बीज में आपको ऐसे कई पौष्टिक तत्व मिल सकते हैं, जो आपके स्वास्थ्य के लिए एक बेहतर विकल्प साबित हो सकते हैं। यहां तक कि आप इस बीज को अपनी डाइट में शामिल करके शरीर के कई रोगों को कोसो दूर कर सकते हैं।

कद्दू के बीज– कद्दू के बीज डायबिटीज जैसे रोगों में भी काफी फायदा पहुंचाता है। ये शरीर में इंसुलिन की मात्रा को संतुलित करने में भी मददगार साबित होता है।

खरबूजे के बीज– खरबूजे के बीज में उच्च मात्रा में प्रोटीन पाया जाता है। इसलिए खरबूजे के बीज को खाना गर्मियों में बहुत फायदेमंद होता है।

पपीते के बीज– पपीते के बीज से आप आसानी से बिना किसी नुकसान के अपनी पाचन तंत्र, गुर्दा संबंधी, सूजन आदि गंभीर बीमारियों से छुटकारा पा सकते हैं।

अंगूर के बीज– अंगूर के बीजों में भारी मात्रा में विटामिन–ई पाया जाता है। अंगूर के बीजों में एंटीऑक्सीडेंट्स होते हैं। इससे डायबिटीज का खतरा भी कम होता है।

अनार के बीज– अनार के बीजों में मौजूद एंटीऑक्सीडेंट्स, कैंसर और दिल की बीमारी की रोकथाम के लिए बेस्ट होते हैं। लोग इन बीजों का सेवन अपना वजन कम करने के लिए भी कर सकते हैं। इन बीजों को ग्रीन सलाद के साथ खाया जा सकता है।

तरबूज के बीज– तरबूज के बीज वजन कम करने के लिए बेस्ट माने जाते हैं। इसके लिए आप इन बीजों को छिलकर दूध या पानी के साथ इसका सेवन करते हैं, तो ये ज्यादा फायदेमंद साबित हो सकते हैं।

अनुभव अमृतम्

वक्रतुण्ड महाकाय,
सूर्यकोटि समप्रभ।
निर्विघ्नं कुरु मे देव,
सर्वकार्येषु सर्वदा।।

कैसे पदार्पण हुआ? आदरणीय परम् श्रद्धेय राजमलजी भाईसाहब का मुझ छोटे से आदमी के जीवन में? इतिहास बदल गया, घटनाएं बदल गयी। मुझे लगता है पारब्रह्म परमात्मा, सृष्टि के नाटक के प्रोड्यूसर, निर्देशक, लेखक, संगीत लेखक, श्रोता सब वो ही हैं। किस तरह से मुझ छोटे से व्यक्ति को निमित्त बनाकर के नारायण सेवा प्रारम्भ करवा दी। अद्भुत, जैसे–जैसे देखता हूँ। यदि राजमलजी भाईसाहब के चरणों में नहीं पहुँचता, यदि राजमलजी भाईसाहब का मिलन मेरे से नहीं होता, तो मफत काका राहत साम्रगी दिवाली बेन मोहन लाल मेहता चेरिटबल ट्रस्ट से नहीं भेजते।

जर्जर तन चिपक्या पेटां रा, गाल खाल रा खाड़ा रे।
कटे अंगरख्या, कटे पगरख्या, आधा फिरे उगाड़ा रे।।

उन भाइयों तक पहुँच नहीं होती। उदयपुर में भी हाजरी नहीं देता, और नारायण सेवा भी नहीं होती। लेकिन भगवान को मंजूर था। परमात्मा, ईश्वर, गोड केवल एक है वो सर्वव्यापक है। भाषा पूरे ब्रह्माण्ड़ में विश्व में एक है। वो है लव की भाषा। पूरे विश्व में एक ही धर्म है एक ही रिलीजन है वो धर्म है मानवता का, मानवता का, इंसानियत का। धन्य–धन्य है सिरोही के कॉलेज में प्रोफेसर आदरणीय सोहनलाल जी पाटनी साहब का। प्रथम दर्शन लाभ पाटनी साहब के हॉस्पीटल में हुए थे। जैसे भगवान ने रोज हॉस्पीटल आना–जाना प्रारम्भ करवाया। चकित होकर के मुझे देखते, अनजान रोगी के पास जा रहा हूँ, मैं बात कर रहा हूँ। जय जिनेन्द्र, राम–राम आप कहाँ से पधारे होकम? वो बार–बार मेरे को ऊपर से नीचे देखता मेरे को। रोगी सोचता अनजान आदमी मुझसे क्यों बात कर रहा है? गाँव से जब आने लगा तो सरपंच ने कहा था शहर में जा रहा तूं। डिस्ट्रिक हैड क्वार्टर में जा रहा है। जिसमें माउण्ट आबू है। उस जिले के मुख्यालय में जा रहा है। वहाँ अनजान आदमियों से ज्यादा जान–पहचान मत बढ़ाना।

सेवा ईश्वरीय उपहार– 83 (कैलाश 'मानव')

दिव्यांग, अनाथ, असहाय एवं वंचितजन की सेवा में सतत सक्रिय संस्थान के विभिन्न सेवा प्रकल्पों में करें सहयोग

कृपया अपने परिजनों या स्वयं के जन्मदिन, शादी की वर्षगांठ पुण्यतिथि को बनायें यादगार..

जन्मजात पोलियो ग्रस्त दिव्यांगों के ऑपरेशनार्थ सहयोग राशि

ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि	ऑपरेशन संख्या	सहयोग राशि
501 ऑपरेशन के लिए	17,00,000	40 ऑपरेशन के लिए	1,51,000
401 ऑपरेशन के लिए	14,01,000	13 ऑपरेशन के लिए	52,500
301 ऑपरेशन के लिए	10,51,000	5 ऑपरेशन के लिए	21,000
201 ऑपरेशन के लिए	07,11,000	3 ऑपरेशन के लिए	13,000
101 ऑपरेशन के लिए	03,61,000	1 ऑपरेशन के लिए	5000

निर्धन एवं दिव्यांगों को खिलाएं निवाला

आजीवन भोजन/नाश्ता सहयोग मिति
(वर्ष में एक दिवस 50 दिव्यांग, निर्धन एवं अनाथ बच्चों के लिए भोजन/नाश्ता सहयोग हेतु मदद करें)

नाश्ता एवं दोनों समय भोजन सहयोग राशि	37000/-
दोनों समय के भोजन की सहयोग राशि	30000/-
एक समय के भोजन की सहयोग राशि	15000/-
नाश्ता सहयोग राशि	7000/-

दुर्घटनाग्रस्त एवं जन्मजात दिव्यांगों को दें कृत्रिम हाथ-पैर और सहायक उपकरणों का उपहार

वस्तु	सहयोग राशि (एक नग)	सहयोग राशि (तीन नग)	सहयोग राशि (पाँच नग)	सहयोग राशि (ग्यारह नग)
तिपहिया साईकिल	5000	15,000	25,000	55,000
व्हील चेयर	4000	12,000	20,000	44,000
केलीपर	2000	6,000	10,000	22,000
वैशाखी	500	1,500	2,500	5,500
कृत्रिम हाथ/पैर	5100	15,300	25,500	56,100

गरीब दिव्यांगों को बनाएं आत्मनिर्भर

मोबाइल /कम्प्यूटर/सिलाई/मेहन्दी प्रशिक्षण सौजन्य राशि

1 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 7,500	3 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -22,500
5 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 37,500	10 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -75,000
20 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि- 1,50,000	30 प्रशिक्षणार्थी सहयोग राशि -2,25,000

अधिक जानकारी के लिए कॉल करें
मो नं. : +91-294-6622222 वाट्सअप : +91-7023509999
आपके अपने संस्थान का पता
नारायण सेवा संस्थान - 'सेवाधाम', सेवानगर, हिरण मगरी, सेक्टर-4, उदयपुर-313002 (राजस्थान) भारत

अपने बैंक खाते से संस्थान के बैंक खाते में जमा करें - अपना दान

आप अपना दान सहयोग नारायण सेवा संस्थान, उदयपुर के नाम से संस्थान के बैंक खातों में सीधे भी जमा करवाकर PAY IN SLIP भेजकर सूचित कर सकते हैं, जिससे दान प्राप्ति रसीद आपको भेजी जा सके।
संस्थान पेन कार्ड नम्बर AAATN4183F, टैन नम्बर JDHN01027F

Bank Name	Branch Address	RTGS/NEFT Code	Account
State Bank of India	H.M.Sector-4	SBIN0011406	31505501196
ICICI Bank	Madhuban	ICIC0000045	004501000829
Punjab National Bank	KalajiGoraji	PUNB0297300	2973000100029801
Union Bank of India	Udaipur Main	UBIN0531014	310102050000148

संस्थान को दिया गया दान-सहयोग आयकर अधिनियम 1961 की धारा 80G के अन्तर्गत 50 प्रतिशत नियमानुसार छूट के योग्य है।

'मन के जीते जीत सदा' दैनिक समाचार-पत्र अब ऑनलाईन साईट पर भी उपलब्ध है
www.narayanseva.org, www.mannkijeet.com
: kailashmanav

मन के जीते जीत सदा (दैनिक समाचार-पत्र) प्रकाशक : कैलाश चन्द्र अग्रवाल स्वामित्व : नारायण सेवा संस्थान प्रकाशन स्थल : सेवाधाम, सेवानगर, हिरण मगरी, से. 4, उदयपुर (राज.) 313002
मुद्रक : न्यूट्रेक ऑफसेट प्रिंटर्स, 13, भोपा मगरी, बी.एस.एन.एल. एक्सचेंज के पास, हिरण मगरी, सेक्टर - 3 उदयपुर (राज.) के लिए नारायण प्रिंटिंग प्रेस, सेवा महातीर्थ, लियो का गुडा, उदयपुर
• सम्पादक : लक्ष्मीलाल गाडरी, मो. 8278607811, 9119398965 • ई-मेल : mankijeet2015@gmail.com • आरएनआई नं. RAJHIN/2014/59353 • डाक पंजी सं. : RJ/UD/29-154/2021-2023